16

घर जहां आत्मा वास करता है ...

घर में शान्ति

(गलातियों 5:22, 23)

पवित्र आत्मा के फल की तीसरी खूबी शान्ति है। हम शान्ति की आवश्यकता को समझते हैं क्योंकि युद्ध की वास्तविकता को जानते हैं: मध्यपूर्व में युद्ध, पूर्वी यूरोप और अफ्रीका में ग्रह और कबीलाई युद्ध, ''वियतनाम और कोरिया के युद्ध और विश्वयुद्ध हमने देखे हैं।'' वास्तव में मानवीय इतिहास में शान्ति से अधिक युद्ध के वर्ष होंगे। मनुष्य जाति की सामान्य स्थिति ''लड़ाइयां और लड़ाइयों की चर्चा'' सुनना है (मत्ती 24:6)। संसारभर में हम शान्ति के लिए प्रार्थना करते और शान्ति की उम्मीद रखते हैं।

हमारे व्यक्तिगत जीवनों के लिए शायद इससे भी अर्थ भरा यह तथ्य है कि हमारे आस-पास जीवन आमतौर पर बहुत शान्तिमय नहीं होता। राजनैतिक लड़ाइयां यानी शब्दों और विचारों के युद्ध अन्तरराष्ट्रीय और स्थानीय स्तर पर लड़े जा रहे हैं। जहां हम काम करते हैं। वहां झगड़ा मिल सकता है। समाज किसी मुद्दे पर बंटा हो सकता है। कई बार कलीसिया में फूट पाई जाती है। घर में भी झगड़ा हो सकता है।

हम इतना झगड़ा देखते हैं कि कई बार हैरान होते हैं कि ''क्या हम कभी शान्ति पा सकते हैं?'' शान्ति परमेश्वर की सामर्थ का परिणाम है। हमारी दिलचस्पी मुख्यतया इस बात में है कि हम सफल घरों को कैसे पा सकते हैं, इस कारण हमें यह समझने की आवश्यकता है कि घर में शान्ति लाने वाला परमेश्वर ही है।

शान्ति नये नियम का व्यापक विषय है:

- परमेश्वर शान्ति का दाता है, जैसा कि प्रेरितों ने यह प्रार्थना करते हुए समझ लिया कि परमेश्वर उनके सुनने वालों और पाठकों को शान्ति दे सकता है, या यह कहकर उन्हें सलाम करते हुए, ''हमारे पिता परमेश्वर की ओर से तुम्हें अनुग्रह और शान्ति मिलती रहे'' (रोमियों 1:7)।[1]
- परमेश्वर ''शान्ति का परमेश्वर'' है (रोमियों 15:33; फिलिप्पियों 4:9; 1 थिस्सलुनीकियों 5:23; इब्रानियों 13:20; देखें 2 थिस्सलुनीकियों 3:16)।
- जब यीशु आया तो अपने साथ शान्ति का संदेश लाया था (लूका 2:14)।
- यीशु शान्ति देता है (यूहन्ना 14:27; 16:33)।
- यीशु हमारी शान्ति है (इफिसियों 2:14)।
- शान्ति मसीही व्यक्ति के जीवन में पवित्र आत्मा के फल का एक भाग है (गलातियों 5:22)।

बाइबल के तथ्यों की यह सूची शान्ति की यदि कोई बात बताती है तो वह यह है कि शान्ति परमेश्वर की ओर से ही मिलती है। हम इसे कई प्रकार से व्यक्त कर सकते हैं: ''शान्ति परमेश्वर की ओर से मिलती है''; ''शान्ति पवित्र आत्मा की ओर से मिलती है''; ''शान्ति उद्धार पाने से मिलती है।'' हम शान्ति को जो भी नाम दें पर यह हमारी अपनी सामर्थ से या हमारी अपनी बुद्धि के द्वारा नहीं मिल सकती। *सच्ची शान्ति का देने वाला केवल परमेश्वर है* यानी हमारे संसार में, हमारे जीवनों में और हमारे घर में कहीं भी, कभी भी परमेश्वर ही शान्ति देता है!

फिर एक सवाल उठता है कि परमेश्वर घर में शान्ति कैसे देता है? वह तीन तरह से शान्ति देता है।

मनुष्य और परमेश्वर के बीच शान्ति[2]

पहले तो परमेश्वर मनुष्य और परमेश्वर के बीच शान्ति देता है। रोमियों 5:1 कहता है, ''सो जब हम विश्वास से धर्मी ठहरें तो अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर के साथ मेल (शान्ति) रखें।'' यह आयत इस बात को मानती है कि हम ने अपने आपको परमेश्वर से अलग किया हुआ है। जब हम पाप करते हैं, तो हम परमेश्वर के शत्रु बन जाते हैं, यानी उसके क्रोध के अधीन आ जाते हैं। परन्तु उसने मसीह के बलिदान के द्वारा और हमें मसीह को स्वीकार करने के द्वारा अपने और हमारे बीच शान्ति के लिए उपाय किया है। जब हम विश्वास और आज्ञापालन में उसकी बात मानते हैं तो हमारी परमेश्वर के साथ कोई लड़ाई नहीं रहती बल्कि हमारी उसके साथ सुलह हो जाती है।

परमेश्वर के साथ शान्ति या मेल में रहना घर को कैसे प्रभावित करता है? यदि हम खुशहाल घर चाहते हैं तो हमें पहले मसीही बनना चाहिए और फिर मसीही लोगों के रूप में व्यवहार करना चाहिए! तब दूसरों के साथ शान्ति हो जाएगी। 1 यूहन्ना 1:7 में हम पढ़ते हैं, ''पर यदि जैसा वह ज्योति में है, वैसे ही हम भी ज्योति में चलें, तो एक-दूसरे से सहभागिता रखते हैं; और उसके पुत्र यीशु का लहू हमें सब पापों से शुद्ध करता है।'' यह आयत जो मसीही लोगों से बात करती है, इसमें एक शर्त और दो परिणाम हैं। शर्त ज्योति में चलना या परमेश्वर की इच्छा पूरी करने के लिए अपना ज़ोर लगाना है। पहला परिणाम तो क्षमा है; क्योंकि यीशु का लहू हमें सब पापों से शुद्ध करता है। दूसरा परिणाम एक-दूसरे से सहभागिता है। हमारी सबसे बड़ी आवश्यकता परमेश्वर के साथ सही ढंग से जुड़ना है। जब हम जुड़ जाते हैं यानी हम अपने पापों से शुद्ध हो जाते हैं तो मनुष्य के साथ भी हमारा सम्बन्ध सही हो जाएगा। हमारी अन्य सम्बन्धों के साथ-साथ अपने परिवारों में भी एक-दूसरे के साथ अच्छी सहभागिता हो जाएगी।

मनुष्य के अन्दर शान्ति

परमेश्वर हर व्यक्ति के अन्दर भी शान्ति देता है। हम कह सकते हैं कि *परमेश्वर मनुष्य और अपने बीच शान्ति देता है*। हम सब अपने अन्दर एक प्रकार का गृहयुद्ध लड़ते हैं। जिसमें हमारा एक भाग एक चीज़ चाहता है, जबकि दूसरा भाग कुछ और चाहता है। परमेश्वर इस गृहयुद्ध से यानी भीतरी झगड़ों को समझाने के लिए यानी जो हमें फाड़ डालने का खतरा है, हमें शान्ति देने के योग्य है। हमें भीतरी शान्ति की प्रतिज्ञा मिली है। यीशु ने अपने चेलों को शान्ति

देने का वायदा किया। उसने कहा, ''मैं तुम्हें शान्ति दिए जाता हूं, अपनी शान्ति तुम्हें देता हूं; जैसे संसार देता है, मैं तुम्हें नहीं देता: तुम्हारा मन न घबराए और न डरे'' (यूहन्ना 14:27; 16:33 भी देखें)। पौलुस ने लिखा,

> किसी भी बात की चिन्ता मत करो: परन्तु हर बात में तुम्हारे निवेदन, प्रार्थना और विनती के द्वारा धन्यवाद के साथ परमेश्वर के सम्मुख उपस्थित किए जाएं। तब परमेश्वर की शान्ति, जो समझ के बिल्कुल परे है, तुम्हारे हृदय और तुम्हारे विचारों को मसीह यीशु में सुरक्षित रखेगी (फिलिप्पियों 4:6, 7)।

खुशहाल घर के लिए पहली शर्त परमेश्वर के साथ शान्ति है; मन में शान्ति दूसरी शर्त है। बहुत बार झगड़े से दोफाड़ हुए घर में समस्या सम्बन्ध की नहीं, बल्कि व्यक्तिगत समस्या होती है। परिवार के एक या अधिक लोग भीतरी झगड़ों से, या हीन भावना या दोष या कमी से, स्वआत्मशीलता या आत्मघृणा से, निराशाओं या बार-बार की नाकामियों से दोफाड़ हो सकते हैं। वे परिवार के हर व्यक्ति पर अपना गुस्सा वैसे ही उतारते हैं जैसे कोई व्यक्ति अपने नियोक्ता पर पागल हो जाए और अपने गुस्से को अपने कुत्ते पर उतारे।

''परमेश्वर की शान्ति, जो सारी समझ परे है'' (KJV) ऐसी व्यक्तिगत समस्याओं के सुलझाने में कैसे सहायता कर सकती है? मन की शान्ति जिसे मसीही लोग जानते हैं वह हर प्रकार के झगड़े को मिटाकर यह गारन्टी नहीं देती कि हम कभी परेशान या दुखी नहीं हुए। परन्तु यह एक ऐसा लंगर दे देती है जो हमें बिना पलटे जीवन के तूफ़ानों का सामना करने के योग्य बनाता है। यह शान्ति हमें अपनी समस्याओं के कारण दूसरों को दुखी किए बिना जीवन में आने वाली कई परेशानियों को सहने में सहायता करती है।

''परमेश्वर की शान्ति'' हमें अपने भीतरी झगड़ों को निपटाने में कैसे सहायता कर सकती है? *हर व्यक्तिगत समस्या का परमेश्वर के पास उत्तर है!* कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं।

दोष। कई बार लोग चिड़चिड़े, घबराए हुए या परेशान क्यों लगते हैं? आम तौर पर यह *दोष* की समस्या के कारण होता है। क्षमा करने के द्वारा *परमेश्वर के पास हर समस्या का समाधान* है! यदि हम प्रभु के निर्देश के अनुसार उसकी ओर मुड़ते हैं, तो हमें क्षमा कर देगा। फिर हमें दोष के बोझ को सहने की कोई आवश्यकता नहीं है।

अप्रिय महसूस करना। कइयों के लिए *अप्रिय लगना* समस्या है। *परमेश्वर के पास अप्रिय लगने की समस्या का उत्तर है* कि वह हम से प्रेम करता है (यूहन्ना 3:16)! वह हमसे हमारी कल्पना से कहीं बढ़कर प्रेम करता है। कोई हम से प्रेम करे या न, परमेश्वर हम से प्रेम करता है!

हीन भावना। एक और आम समस्या *हीन भावना या बेकार समझे जाना है। परमेश्वर के पास हीन भावना का उत्तर है।* वास्तव में उसके पास दो उत्तर हैं। पहले तो वह हमें बताना चाहता है कि हम उसकी दृष्टि में बेकार नहीं हैं; हम इतने मूल्यवान हैं कि उसने हमारे लिए मरने को अपना इकलौता पुत्र दे दिया (रोमियों 5:8)। दूसरा वह हमें बताता है कि हम हर आवश्यक बात उसकी सहायता से कर सकते हैं (फिलिप्पियों 4:13; इफिसियों 3:20, 21)।

असफलता। हम में से कई लोग *बार-बार की असफलताओं* की समस्या से दुखी हैं। हम ने जो कुछ पाने की कोशिश की उसमें हम परेशान हो जाते हैं। शायद हम ने जीवन के हर क्षेत्र

में बार-बार निराशा देखी थी। जीवन की निराशाओं का परमेश्वर के पास उत्तर है। वह एक सही दृष्टिकोण यानी वह दृष्टिकोण देता है जो अनन्तकाल के दृष्टिकोण से देखता है कि हमारी अधिकतर निराशाएं अधिक महत्वपूर्ण नहीं हैं। महत्व इस बात का है कि हमारा उद्धार हो रहा है और हम स्वर्ग में जा रहे हैं। इस जीवन में असफलताओं के बावजूद हमें उद्धार का आश्वासन मिल सकता है।

मसीही लोगों के रूप में जब हम अपने आपको दयनीय समझते हैं और दूसरों के लिए जीवन को तरसयोग्य बनाने के प्रलोभन में पड़ते हैं तो यह इसलिए नहीं है कि मसीह हमारी सहायता नहीं कर सकता। इसके विपरीत यह इस कारण है कि हमने उन संसाधनों को नज़र अन्दाज़ कर दिया है जो मसीह हमारे लिए देता है। यदि हम सचमुच उस पर विश्वास करते हैं जो बाइबल बताती है और उन शिक्षाओं को अपनाते हैं, तो हम अपने आप में शान्ति महसूस करेंगे, ''परमेश्वर की शान्ति।''

इसलिए अच्छी खबर यह है कि हमें अपने साथ लड़ाई करने की आवश्यकता नहीं। प्रभु की ओर मुड़ कर और अपना लगाव उसी की ओर लगाकर मसीही के रूप में हम शान्ति पा सकते हैं। वह हमारी कमियों की पूर्ति कर सकता है और हमारे झगड़े निपट सकते हैं। अविभाजित मनों के साथ हम सचमुच में शान्ति से, न केवल परमेश्वर के साथ, बल्कि अपने आप के साथ भी रह सकते हैं। हमारी भीतरी शान्ति के सबसे बड़े लाभपात्रों में हमारे परिवार होंगे।

मनुष्य और मनुष्य के बीच शान्ति

इसके अलावा परमेश्वर मनुष्य और मनुष्य के बीच शान्ति देता है। इस प्रकार से परमेश्वर घर में परिवार के लोगों के बीच शान्ति देता है। वह ऐसा कैसे करता है?

बाधाओं को तोड़कर

पहले तो परमेश्वर उन दीवारों को तोड़कर जो लोगों को अलग करती हैं उन में शान्ति लाता है। पुराने नियम के रब्बियों ने भविष्यवाणी की थी कि मसीहा का राज्य शान्ति का राज्य होगा, जिसमें ''भेड़िया भेड़ के बच्चे के संग रहा करेगा'' (यशायाह 11:6)। अन्य शब्दों में ऐसा स्थान जहां पूर्व शत्रु मित्र बन जाएंगे। यह भविष्यवाणी नये नियम के युग में पूरी हुई, जब यीशु ने अलग अलग तरह के लोगों को अपनी कलीसिया में इकट्ठे किया। उदाहरण के लिए उसने यहूदियों और अन्यजातियों के बीच शान्ति या सुलह कराई। इफिसियों 2:14 के अनुसार, उसने ''दोनों को एक पर लिया और अलग करने वाली दीवार को जो बीच में थी, ढहा दिया।'' इसलिए कलीसिया में हर तरह के लोग हों, जो पूर्व सम्बन्धों के बावजूद शान्ति और भाईचारे से रहें। इसी प्रकार घर में, मसीही लोग जिनका पालन पोषण अलग अलग तरह से हुआ था एक-दूसरे के साथ शान्ति से रह सकते हैं, क्योंकि अब वे मसीह में एक हैं।

लोगों को शान्तिप्रिय बनाकर

दूसरा परमेश्वर लोगों को मिलनसार बनाकर लोगों के बीच शान्ति लाता है। मनुष्य जाति के लिए युद्ध-प्रेमी यानी झगड़ालू, अर्थात लड़ने को तैयार रहने वाले होने से बढ़कर कुछ भी

स्वाभाविक नहीं है। परन्तु जब हम मसीह को अपने जीवन दे देते हैं, तो हम दूसरों के विरुद्ध लड़ने की इच्छा को खो देते हैं और इसके विपरीत जहां तक हो अपने पड़ोसियों के साथ शान्ति से रहना चुनते हैं। यीशु ने ''मेल कराने वालों'' (मत्ती 5:9) को आशीष दी और पौलुस ने लिखा, ''जहां तक हो सके, तुम भरसक सब मनुष्यों के साथ मेल-मिलाप रखो'' (रोमियों 12:18)। प्रतीकात्मक अर्थ में यीशु अपने चेलों को अपने प्रतिदिन के जीवन के कामकाज में लगने के लिए जाने पर कहता है: ''अपनी तलवार म्यान में रख ले क्योंकि जो तलवार चलाते हैं वे तलवार से नष्ट किए जाएंगे'' (मत्ती 26:52)। मसीही लोग बुद्धिमान लोग हैं, जिन्हें बुद्धि ऊपर से मिली है जो ''पहले तो पवित्र होता है, और फिर मिलनसार, कोमल और मृदुभाव और दया और अच्छे फलों से लदा हुआ और पक्षपात और कपटरहित होता है'' (याकूब 3:17)। जिस कारण मसीही लोग आम तौर पर एक-दूसरे को और अपने पड़ोसियों को साथ लेकर चलते हैं क्योंकि, परमेश्वर की सामर्थ के द्वारा वे मिलनसार लोग हैं; ''मसीह की शान्ति'' उनके मनों में राज करती है (कुलुस्सियों 3:15)।

इसी प्रकार घर में पवित्र आत्मा पाए हुए लोग झगड़ालू नहीं, बल्कि मिलनसार होते हैं। वे लड़ने को तैयार नहीं रहते, बल्कि वे समाधान ढूंढ़ने में लगे रहते हैं। वे निष्पक्ष और निष्कपट और मृदुभाव होते हैं। वे मिलनसार लोग होते हैं जिस कारण घर वह स्थान बन जाता है, जहां शान्ति पाई जाती है।

ढांचा देना

तीसरा परमेश्वर घर के लिए ढांचा देकर और परिवार के लोगों के लिए उस ढांचे को मानना आवश्यक बनाकर शान्ति लाता है। परमेश्वर अधिकार के अधीन होने की शर्त देकर मानवीय समाजों में शान्ति देता है। वह क्रान्ति नहीं देता, बल्कि मसीही लोगों को सरकारी अधिकारियों के अधीन होना सिखाता है (रोमियों 13:1-7; 1 पतरस 2:13-17)। इस कारण परमेश्वर के लोग होते हुए, सरकार के प्रति स्वेच्छा से अधीन होकर[3] हम एक सुव्यवस्थित, शान्ति-प्रिय समाज में योगदान देते हैं। घर में भी परमेश्वर के निर्देशों को मानना चुन कर मसीही लोग मिलनसार परिवार में योगदान देते हैं।

घर के लिए परमेश्वर की योजना पति के पत्नी का सिर होने और पत्नी के लिए अपने पति के नेतृत्व के अधीन होने की है। घर के लिए परमेश्वर की योजना पति को पत्नी का सिर होने और पत्नी को अपने पति की अगुआई को मानने की मांग करती है। पौलुस ने लिखा:

> क्योंकि पति-पत्नी का सिर है जैसे कि मसीह कलीसिया का सिर है; और आप ही देह का उद्धारकर्त्ता है। पर जैसे कलीसिया मसीह के आधीन है, वैसे ही पत्नियां भी हर बात में अपने-अपने पति के आधीन रहें (इफिसियों 5:23, 24)।

इसके अलावा उसने कहा कि बच्चे अपने माता-पिता की आज्ञा मानने वाले हों (इफिसियों 6:1-3)। पति की अगुआई या अधिकार मनमाने ढंग से या कड़ाई से नहीं होना चाहिए। वचन उसे अपनी पत्नी से वैसे ही प्रेम करने को कहता है ''जैसा मसीह ने भी कलीसिया से प्रेम करके अपने आपको उसके लिए दे दिया'' (इफिसियों 5:25)। जब तक कोई अपनी पत्नी से इतना प्रेम

रखता है, जितना मसीह ने कलीसिया से किया, तो उसकी मुख्य चिन्ता उसकी भलाई ही होगी।

इसी प्रकार अपने बच्चों पर माता-पिता का अधिकार पक्षपात या कठोरता से नहीं होना चाहिए। बाइबल कहती है कि ''पिता, अपने बच्चों के क्रोध को न भड़काएं'' (इफिसियों 6:4)। पिताओं से कहा गया है, ''अपने बालकों को तंग न करो, न हो कि उनका साहस टूट जाए'' (कुलुस्सियों 3:21)।

घर में अधिकार वास्तविक है जिसमें पति घर का अगुआ है, पत्नी अपने पति के अधीन रहती है और बच्चों को अपने माता-पिता की आज्ञा मानना आवश्यक है। परन्तु परमेश्वर द्वारा दिया गया अधिकार ज़िम्मेदारी और प्रेम के साथ सन्तुलित है। अधिकार वालों के लिए नेतृत्व को ज़िम्मेदारी से केवल उनकी भलाई को ध्यान में रखते हुए जिनकी वे अगुआई करते हैं, आवश्यक है। जब घर में इस नमूने का पालन किया जाता है यानी जब अधिकार वाले प्रेम और ज़िम्मेदारी से अगुआई करते हैं और दूसरे लोग अधीनता से उनकी मानते हैं तो घर में शान्ति का राज होता है।

स्थान के होने में और स्थान को जानने में सुरक्षा पाई जाती है। घर में यदि हर किसी को स्थान मिले और हर किसी को लगे कि उससे प्रेम किया जाता है, तो शान्ति चारों ओर होगी। पत्नी की भूमिका अपने पति की भूमिका वाली नहीं है, पर इसका भी महत्व उतना ही है। उसे वह स्थान दिया गया है जो उसका है यानी उसका महत्व है और उससे प्रेम किया जाता है। ऐसे प्रबन्ध से सुरक्षा और शान्ति आनी चाहिए। इसी प्रकार घर में बच्चों का भी स्थान है। उनकी भूमिका अपने माता-पिता वाली भूमिका नहीं है पर उनका महत्व है। उनसे प्रेम किया जाता है उनकी परवाह की जाती है और वे उस प्रबन्ध में सुरक्षा और शान्ति ढूंढ़ते हैं।

इसके अलावा झगड़े होने पर (जैसा कि बीच-बीच में होगा) एक ढांचा है, जिसके भीतर उन्हें सुलझाया जा सकता है। मान लीजिए कि पति और पत्नी आपस में सहमत नहीं होते। पति घर का अगुआ है। क्या इसका अर्थ यह है कि वह जो चाहे कर सकता है? नहीं, क्योंकि वह अपनी पत्नी से प्रेम करता है। क्या इसका अर्थ यह है कि वह जो चाहे कर सकती है क्योंकि उसका पति उससे प्रेम करता है? नहीं। क्योंकि वह भी उससे प्रेम करती है और उसके अधीन रहना चाहती है। परिवार का हर सदस्य अपने आपको दूसरों के सेवक के रूप में देखता या देखती है। इस प्रेम के कारण हर कोई दूसरे को अपने तरीके से काम करने देना चाहता है। अन्त में यदि पति को परिवार की भलाई के लिए अपनी पत्नी के विरुद्ध कोई निर्णय देना हो, तो वह केवल ऐसा निर्णय बहुत सोच-विचार कर देगा। उस मामले में, पत्नी को पता होगा कि उसकी बात को निष्पक्षता से सुना गया है और उसकी बात पर ध्यान दिया जाएगा। इसके अलावा यह जानना भी शान्ति देने वाला है कि परमेश्वर के द्वारा ठहराए हुए प्रबन्ध के भीतर, किसी को इन्चार्ज बनाकर उसे अन्तिम निर्णय लेने की ज़िम्मेदारी दी जाती है।

परमेश्वर घर के लोगों में शान्ति लाता है। न केवल वह लोगों के बीच की बाधाओं को तोड़ता है और लोगों को मिलनसार बनाता है बल्कि वह परिवार के लिए भी ढांचा देता है। उसकी योजना को मान लिया जाए तो उसकी शान्ति को मानना पक्का है।

सारांश

लड़ाई और झगड़े से भरे संसार में, परमेश्वर शान्ति देता है: अपने साथ शान्ति, मन में शान्ति

और घर में परिवार सहित दूसरे लोगों में शान्ति।

परन्तु परमेश्वर वह शान्ति बिना हमारे सहयोग के नहीं देता। जब हम उसके निर्देषों को मानते हैं तो वह हमें शान्ति देता है, यानी न तो उससे पहले और न हमारे आज्ञापालन के बिना।

उद्धार पाए होने की कुंजी यही है। परमेश्वर चाहता है कि हम उसके साथ शान्ति से रहें, पर यह शान्ति वह तब तक नहीं दे सकता, जब तक हम उसके पास लौटकर उसकी शर्तों को नहीं मानते।

टिप्पणियां

[1]1 कुरिन्थियों 1:3; 2 कुरिन्थियों 1:2; गलातियों 1:3; इफिसियों 1:2; फिलिप्पियों 1:2; कुलुस्सियों 1:2; 1 थिस्सलुनीकियों 1:1; 2 थिस्सलुनीकियों 1:2; 1 तीमुथियुस 1:2; 2 तीमुथियुस 1:2; तीतुस 1:4; फिलेमोन 3. [2]यहां चाहे पुरुष और स्त्री की बात करते हुए सामान्य अर्थ में इस्तेमाल किया गया है, कई परिस्थितियों में इन वैकल्पिक स्थितियों को प्राथमिकता दी जा सकती है: ''व्यक्ति और परमेश्वर के बीच शान्ति,'' ''व्यक्ति के भीतर शान्ति,'' और ''लोगों के बीच शान्ति।'' [3]बेशक यदि सरकार लोगों से कुछ ऐसी मांग करती है, जो परमेश्वर की व्यवस्था का उल्लंघन हो, तो मसीही व्यक्ति को उस आज्ञा को मानने से इनकार कर देना आवश्यक है। ''मनुष्यों की आज्ञा से बढ़कर परमेश्वर की आज्ञा का पालन करना ही हमारा कर्त्तव्य है'' (प्रेरितों 5:29)।